Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380,
http://www.srjis.com/issues_data?issueId=210
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAY-JUNE 2023, VOL- 11/77
https://doi.org/10.5281/zenodo.8108074

हनुमानगढ़ जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर घर–परिवेश के प्रभाव का अध्ययन

सुभाष चंद्र & डॉ. परषोत्तम स्वामी
शोधकर्ता
शोध पर्यवेक्षक महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर (राज.)

Paper Received On: 21 JUNE 2023
Peer Reviewed On: 30 JUNE 2023
Published On: 01 JULY 2023

Abstract

शिक्षा के क्षेत्र में समस्त भौक्षिक प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु व्यक्ति ही माना जाता है। व्यक्ति की उच्च बौद्धिक क्षमता ही उसे नवीन सृजन की प्रेरणा देती है। मनुश्य की कोई भी मानसिक क्रिया बुद्धि से पृथक नहीं, बुद्धि व्यक्ति की एक अमूर्त भाक्ति है लेकिन वह व्यक्ति के दैनिक क्रिया–कलापों को प्रभावित करती है। बालक विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करते हुए ऊँची भौक्षणिक उपलब्धि प्राप्त करे, इस हेतु विद्यालय में योग्य शिक्षकों की नियुक्ति कर मनोवैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है। शैक्षणिक उपलब्धि विशेष रूप से वर्तमान सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सामग्री में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह किसी कक्षा में प्रवेश एवं पदोन्नति का मुख्य आधार बनता है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में, परीक्षा किसी व्यक्ति की प्रतिभा का आकलन करने में प्रमुख भूमिका निभाती है। बालक की भौक्षिक निश्पत्ति के आधार पर यदि उन्हें उच्च कक्षाओं के विशयों का चुनाव किया जावे तो वे अधिक सफलतापूर्वक अध्ययन कर सकते है। शोधकर्ता ने इस अध्ययन में स्कूल जाने वाले किशोरों की शैक्षिणिक उपलब्धि पर घर–परिवेश के प्रभाव पर प्रकाश डाला है।

मुख्य शब्द : *माध्यमिक स्तर, किशोर, शैक्षणिक उपलब्धि और घर–परिवेश।*

CC BY *Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com*

प्रस्तावना

बालक के विकास में पितृ–स्वीकृति एवं मातृ–स्वीकृति का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यदि बालक का लालन–पालन समुचित रूप से माता–पिता द्वारा किया जाये तो उसके व्यक्तित्व का विकास भलीभाँति होने की संभावना रहती है। बालक–बालिका विद्यालयों में विद्योपार्जन करते हैं। उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले विभिन्न घटकों में एक महत्वपूर्ण घटक घर का वातावरण है। घर के वातावरण से तात्पर्य माता–पिता द्वारा उसे सुविधा प्रदान करना है। घर और परिवार न केवल समाज की सबसे छोटी इकाई है, किन्तु बच्चों के लिए प्रारम्भिक शिक्षालय होते है। जिसमें माता–पिता ही प्रथम शिक्षक होते है, जो छाप माता–पिता के व्यवहार, झुकाव व दृष्टिकोण की बच्चों पर पड़ती हैं वह उनके भविष्य बनाने में बहुत सीमा तक निर्णायक होती है। धर का वातावरण बुद्धि से भी घटित शैक्षिक

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

उपलब्धि को प्रभावित करता है। **रेड्डी के कथनानुसार**– ''वास्तव में बच्चों के शैक्षिक और व्यावसायिक उपलब्धि में परिवार का महत्वपूर्ण योगदान होता है।''

माता एवं पिता की स्वीकृति, एकाग्रता एवं अस्वीकृति का उनके बालक–बालिकाओं की उपलब्धि पर कहाँ तक प्रभाव पड़ता है? यह एक विवादास्पद विषय रहा है। इस विषय पर अभी तक किसी ठोस नतीजे पर नहीं पहुँचा जा सका है। वर्तमान शोध इन्ही प्रभावों के अध्ययन के लिए किया गया है। बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पारिवारिक वातावरण का प्रभाव ज्ञात किया जाना आवश्यक है। आज के भौतिक युग में माता–पिता अत्यन्त व्यस्त है। इस व्यस्तता का परिणाम यह होता है कि वे अपने बच्चों के लालन–पालन की ओर कम ध्यान देते हैं। ऐसी परिस्थिति बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि को भी प्रभावित करती है।

शोध की आवश्यकता व महत्व

शोध कार्य में शैरी तथा सिन्हा द्वारा निर्मित **''पारिवारिक सम्बन्ध सूची''** इस अध्ययन में काम में ली गयी। शैरी व सिन्हा (1977) और रॉ (1957) ने माता–पिता के दृष्टिकोण को तीन तरह का बताया है– स्वीकारोक्ति, एकाग्रता और अस्वीकारोक्ति। ब्रेकन और क्राइड्स (1964) ने इनका मूल्यांकन करने लिए एक सूची तैयार की जो बहुत लाभदायक सिद्ध हुई। ब्रेकन (1965), बायर्स और जकारिया (1968) और मेडेविन (1970) ने भी इस सूची का उपयोग अपने सर्वेक्षण में किया। अतः इसी सूची का उपयोग इस अध्ययन में भी किया गया। जैसा कि **वाट्सन** (1913) का कथन है कि किसी भी बच्चे को उपयुक्त वातावरण में रखकर इच्छानुसार उसका विकास किया जा सकता है। चाहे आप उसे डॉक्टर, इन्जीनियर, कलाकार, व्यापारी अथवा भिखारी, चोर आदि बना सकते है। **रेड्डी** (1973) की भी मान्यता है कि बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि को उसकी बुद्धि से अधिक प्रभावित करता है उसके परिवार का वातावरण। हमारे समक्ष अब प्रश्न यह है कि बच्चे को उपयुक्त वातावरण देने में माता–पिता के दृष्टिकोण की क्या भूमिका हैं? वर्तमान अध्ययन से यह स्पष्ट हो गया है कि माता–पिता की उच्च स्वीकारोक्ति, उच्च एकाग्रता और निम्न अस्वीकारोक्ति बच्चे की उच्च शैक्षिक उपलब्धि पर अनुकूल प्रभाव ड़ालती है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि माता–पिता को बच्चों के कार्यो में रूचि लेनी चाहिए और उनकी बातें ध्यान से सुने, उनको अपने कार्य करने में तथा निर्णय लेने में उचित स्वतंत्रता देनी चाहिए। उनकी देखी–अनदेखी नहीं करें और न ही उन पर कड़ा नियंत्रण रखें और ना ही उन पर अपनी कोई बात थोपनी चाहिए। अर्थात् माता–पिता का बच्चों के प्रति व्यवहार सहज व सरल हो।

अतः यह अध्ययन बताता है कि माता–पिता का अपने बच्चों के प्रति सही दृष्टिकोण क्या है ? यह सही दृष्टिकोण ही बच्चों की उच्च शैक्षिक उपलब्धि के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस प्रकार माता–पिता के लिए इस अध्ययन के परिणाम लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। इस प्रकार शैक्षिक विकास

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

की दृष्टि से माता–पिता को यदा–कदा अपने बालक–बालिकाओं का मार्गदर्शन करना चाहिए और साथ ही उन्हें घर का उपयुक्त वातावरण भी देना चाहिए।

अध्यापकों को भी चाहिए कि वे समय–समय पर बालकों के अभिभावकों के साथ संपर्क स्थापित कर उन्हे बतायें कि उनको अपने बच्चों के प्रति कैसा दृष्टिकोण रखना चाहिए तथा उनके दृष्टिकोण का उनके बच्चे की शैक्षिक उपलब्धि पर कैसा प्रभाव पड़ रहा है। इस तरह से माता–पिता के सही दृष्टिकोण निर्धारण करने में अध्यापक एवं अभिभावकों की समय–समय पर भेंट लाभदायक हो सकती है। सम्भवतः यह भी इसलिए है कि इन माता–पिता के लिए उनके बच्चों के प्रति उचित दृष्टिकोण रखना अधिक आसान एवं व्यवहारिक होना संभव होगा। इस प्रकार वर्तमान शोध अपने आप में बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के पड़ने वाले प्रभावों को प्रदर्शित करता है। अतः यह अध्ययन लाभकारी सिद्ध होगा।

समस्या कथन

प्रस्तुत अनुसंधान की समस्या का शीर्षक है– ''हनुमानगढ़ जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर घर–परिवेश के प्रभाव का अध्ययन''।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत अनुसंधान के लिए निम्नलिखित उद्देश्य रखे गये हैं–

(1) हनुमानगढ़ जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर घर–परिवेश के प्रभाव को जानना।

(2) जिले के बालक–बालिकाओं के माता–पिता की पारिवारिक मासिक आय का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव जानना।

(3) माता व पिता की शैक्षिक योग्यता का बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव को जानना।

(4) मातृ स्वीकारोक्ति–अस्वीकारोक्ति का बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव ज्ञात करना।

(5) पितृ स्वीकारोक्ति–अस्वीकारोक्ति का छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव ज्ञात को जानना।

शोध परिकल्पनाएं

प्रस्तुत अनुसंधान के लिए निम्नलिखित शोध परिकल्पनाएं निर्मित की गयी।

(1) हनुमानगढ़ जिले के माध्यमिक स्तर के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर घर–परिवेश का कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

(2) जिले के छात्र–छात्राओं के माता–पिता की पारिवारिक मासिक आय का शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

(3) माता व पिता की शैक्षिक योग्यता का छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

(4) मातृ स्वीकारोक्ति–अस्वीकारोक्ति का बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

(5) पितृ स्वीकारोक्ति–अस्वीकारोक्ति का छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

शोध न्यादर्श व सीमांकन

हनुमानगढ़ टाउन व जंक्शन के पांच माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से 100 बालक–बालिकाओं पर ही किया गया। समय व श्रम को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता द्वारा अनुसंधान को निम्न प्रकार से सीमाबद्ध किया गया है। समय और साधन के अभाव में अध्ययन कार्य केवल हनुमानगढ़ जिला स्तर की शैक्षिक सस्थाओं में ही किया गया है।

न्यादर्श चयन प्रक्रिया

माध्यमिक कक्षा के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर घर–परिवेश के प्रभाव को जानने के लिए यादृच्छिक विधि (Random sampling method) का प्रयोग किया गया। जिसमें शोधकर्ता ने न्यादर्श के रूप में 10वीं कक्षा के 100 छात्र–छात्राओं (50 छात्राएं एवं 50 छात्र) को चुना गया।

अनुसंधान में प्रयुक्त विधि व प्रविधि

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि (Survey method) का प्रयोग किया गया है। इस विधि के अन्तर्गत दत्त संकलन करके उपकरण की सहायता से अनुसंधान कार्य किया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत भोध में मध्यमान, मानक विचलन व टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया।

मुख्य शोध निष्कर्ष

प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गये हैं–

1. माता–पिता की स्वीकारोक्ति का छात्रों व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक (.05 स्तर पर) अनुकूल प्रभाव पाया गया। अधिक स्वीकारोक्ति वाले बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि अधिक तथा कम स्वीकारोक्ति वाले छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि कम पायी गयी हैं।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

2. माता–पिता की एकाग्रता का भी बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक (.05 स्तर पर) अनुकूल प्रभाव पाया गया हैं।
3. माता पिता की अस्वीकारोक्ति का छात्रों व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक (.05 स्तर पर) प्रतिकूल प्रभाव पाया गया है।
4. मातृ स्वीकारोक्ति का बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक (.05 स्तर पर) अनुकूल प्रभाव पाया गया है।
5. पितृ स्वीकारोक्ति का छात्रों व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक (.05 स्तर पर) अनुकूल प्रभाव पाया गया है।
6. मातृ एकाग्रता का छात्रों व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक (.05 स्तर पर) अनुकूल प्रभाव पाया गया है।
7. पितृ एकाग्रता का बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक (.05 स्तर पर) अनुकूल प्रभाव पाया गया है।
8. मातृ अस्वीकारोक्ति का छात्रों व छात्राओं दोनों पर सार्थक (.05 स्तर पर) प्रतिकूल प्रभाव पाया गया है।
9. पितृ अस्वीकारोक्ति का बालक–बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक (.05 स्तर पर) प्रतिकूल प्रभाव पाया गया हैं।

उपर्युक्त निष्कर्ष यह दर्शातें हैं कि माता–पिता दोनों संयुक्त रूप से तथा दोनों का भिन्न–भिन्न रूप से बच्चों के प्रति दृष्टिकोण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता हैं। वर्तमान शोधकार्य से यह तथ्य प्रकाश में आया कि माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि के स्तर को बनाये रखने के लिए उपयुक्त पारिवारिक वातावरण आवश्यक है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट हो गया कि उच्च आर्थिक स्तर वाले उच्च शैक्षणिक योग्यता वाले माता–पिताओं की संतानों की शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च होती है।

शोध निष्कर्षो की विवेचना

प्रायः यह देखा गया है कि माता–पिता जब अपने बच्चों पर भरोसा करते हैं और उन्हें कुछ सीमा तक अपना कर्तव्य निभाने का अवसर व स्वतत्रंता देते हैं तो बच्चों की प्रतिभा का भी विकास होता है। बच्चा अपने आपको परिवार का महत्वपूर्ण सदस्य समझता है और अपने छात्र रूपी कर्त्तव्य को पूर्ण आत्म–विश्वास के साथ निभाता है। इसीलिए माता–पिता की उच्च स्वीकारोक्ति एवं एकाग्रता का छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

कुछ ऐसे माता–पिता भी होते हैं जो आवश्यकता से अधिक बच्चों पर नियंत्रण रखना चाहते हैं। उन पर अपनी बात थोपना चाहते हैं। अपनी सारी शक्ति एवं ध्यान उन पर केन्द्रित रखते हैं। आवश्यकता से अधिक बच्चों से अपेक्षा रखते हैं। कुछ माता–पिता जो बच्चों की देखी–अनदेखी,

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सुनी–अनसुनी करते हैं। उनकी कतई परवाह नहीं करते, उनको प्यार नहीं देते, ना ही उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं और ना ही उनकी भावनाओं को समझने की कोशिश करते हैं। ऐसे दृष्टिकोण रखने वाले माता–पिता के बच्चे या तो दबे–दबे, डरे–डरे और संकुचित रहते हैं और अपनी प्रतिभाओं का विकास नहीं कर पाते या बच्चे बहुत असन्तुष्ट हो जाते हैं और कभी–कभी माता–पिता के विरोधी भी बन सकते हैं। वे अपने कर्तव्यों का पालन नहीं करते। अतः माता–पिता की अस्वीकारोक्ति दृष्टिकोण का प्रभाव छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रतिकूल पड़ता है।

यह तो सब मानते आये हैं कि बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में परिवार का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है और इसको सिद्ध करने के लिए अध्ययन हो चुके हैं। किन्तु परिवार के प्रभाव से सम्बन्धित जिन बिन्दुओं को अब तक उभारा गया है उसमें परिवार का सामाजिक आर्थिक स्तर ही केन्द्र बिन्दु रहा है। माता–पिता के दृष्टिकोण को प्रमुखता नहीं दी गयी है।

परिवार की मासिक आय

परिवार की मासिक आय का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक (.05 स्तर पर) प्रभाव पाया गया है जबकि छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पाया। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी होने पर बालकों को शैक्षिक सुविधाएं अधिक अच्छी प्राप्त होती हैं। बालक को अपने माता–पिता के साथ शारीरिक श्रम में हाथ नहीं बटाना पड़ता है। जबकि बालिकाएं बहुत सी जिम्मेदारियों को निभाती है। सम्भवतः यही कारण हो सकते हैं जिससे कि परिवार की आय से छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अलग–अलग प्रकार से प्रभावित हुई।

माता–पिता की शैक्षिक योग्यता

माता–पिता की शैक्षिक योग्यता का भी छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक (.05 स्तर पर) अनुकूल प्रभाव पाया गया है जबकि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पाया गया। माता–पिता की शैक्षिक योग्यता उच्च होने से वे शिक्षा के महत्व को समझते हैं। बच्चों को शिक्षा के लिए उत्साहित करते है, बच्चों की शैक्षिक समस्याओं का समाधान करते है, उनको शिक्षा की सभी सुविधाऐं उपलब्ध कराने का प्रयत्न करते हैं। सम्भवतः यही कारण हो सकते हैं जिससे कि माता–पिता की शैक्षिक योग्यता से छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित हुई।

परिवार का सामाजिक आर्थिक स्तर

किसी भी परिवार का सामाजिक आर्थिक स्तर मुख्यतः उन परिवार की मासिक आय तथा उसके सदस्यों विशेषकर माता–पिता की शैक्षिक योग्यता पर निर्भर करता है। वर्तमान अध्ययन में इन तत्वों की महत्ता बहुत स्पष्ट हो गयी है कि परिवार के सामाजिक आर्थिक स्तर का बच्चों पर बहुत ही प्रभाव पड़ता है। इस तथ्य को कई गवेषणकर्ताओं ने स्वीकारा है। उनमें से बलदेवसिंह (1957), भटनागर (1958), शर्मा (1961), माहेश्वरी (1969), उषा (1972), फाटक (1972) के अनुसार सामाजिक–आर्थिक स्तर का बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि से घनिष्ठ सहसम्बन्ध है।

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

परन्तु चौरड़िया (1969), पारिक (1970), शर्मा एवं शर्मा (1972) के अनुसार सामाजिक आर्थिक स्तर का बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता। इस तरह से अधिकांश गवेषणाओं से यह तथ्य उभरता है कि सामाजिक एवं आर्थिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि से घनिष्ठ सहसम्बन्ध है। कुछ गन्वेषणाओं से यह भी स्पष्ट होता है कि माता–पिता की शैक्षिक योग्यता का उनके बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है। वर्तमान अध्ययन से दोनों ही तत्व, माता–पिता का आर्थिक स्तर और उनकी शैक्षिक योग्यता के महत्व की स्पष्टतया पुष्टि होती है। अन्त में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हो गया है कि माता–पिता के दृष्टिकोण, उनकी मासिक आय और उनकी शैक्षिक योग्यता का उनके बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर उच्च सार्थकता के साथ गहरा प्रभाव पड़ता है।

समाहार

प्रत्येक क्षेत्र के भोधकार्य की उपादेयता उसके व्यावहारिक उपयोग पर निर्भर करती है। भोध कार्य का अध्ययन कर सम्बन्धित क्षेत्र में कार्य करने वाले वि ोशज्ञ, अध्यापक, अभिभावक, भोधार्थी एवं कार्यकर्ताओं को अपनी तथा समाज एवं समुदाय की समस्याओं को हल करने का प्रयास करना चाहिए तथा अपनी कार्य पद्धति में गुणात्मकता विकसित करनी चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

ढौंढियाल एवं फाटक (1982). शैक्षिक अनुसंधान की विधि शास्त्र. जयपुर : राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
सिंह, जगत (1985). बालक और अभिभावक. दिल्ली : अरविन्द प्रकाशन।
भटनागर, सुरेश (2005). शिक्षा मनोविज्ञान. मेरठ : आर. लाल बुक डीपो।
सक्सेना, एन. आर. स्वरूप (2005). शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार. मेरठ : आर. लाल बुक डीपो।
सुखिया, एम.पी. व महरोत्रा, पी.वी. (1991). शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व. आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।
त्यागी, जी.एस.डी. (1996). शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार. मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन।
शर्मा, आर .ए. (2005). शिक्षा अनुसंधान. मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन।
भार्गव, ऊशा (1987). कि ोर मनोविज्ञान. जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

Cite Your Article as:

Subhas Chandra, & Dr. Parshotum Swami. (2023). HANUMANGAD JILE KE MADHYAMIK STAR KE VIDYARTHIYO KI SHAIKSHANIK UPLABDHI PA GHAR-PARVESH KE PRBHAV KA ADHYYAN. Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies, 11(77), 45–51. https://doi.org/10.5281/zenodo.8108074

Copyright © 2023, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies